Live in the Spirit

सीड़ फॉर लिविंग

ब्रदर मैन्युएल मिनिस्ट्रिज मासिक प्रकाशन जनवरी २०१०

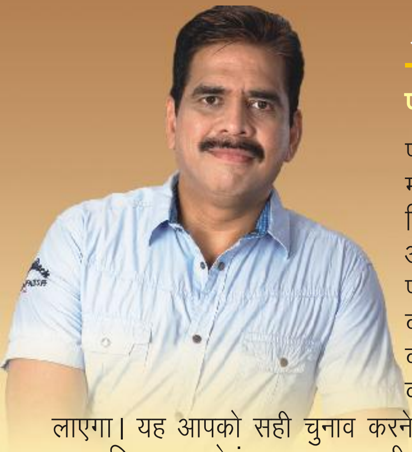

आपके फैसले - आपका भाग्य।

परमेश्वर के वचनों पर निष्ठा रखो।

परमेश्वर का वचन बहुत ही महत्वपूर्ण है। अगर आप चाहते हो कि, परमेश्वर आपके जीवन को छुए, और साथ ही आप और आपके परिवार को सुखी और आशीर्वादित करे तो, आपको परमेश्वर के वचनों के प्रति निष्ठावान रहना होगा। वचन आपके जीवन में चंगाई लाएगा। यह आपको सही चुनाव करने में मदद करेगा और सही चुनाव का नतिजा फायदेमंद तथा फलदायी होगा। और वैसे ही अगर आप गलत चुनाव करते हो, तो सभी तरह की मुसीबतें आपका इंतजार करते हुए नजर आएँगी।

याद रखे, आपका हर एक फैसला आपके भाग्य के मुकाम को तय करता है। आपका सही चुनाव और सही फैसला ही आपको आपके दिल की हर एक आशाओं की ओर आगे बढ़ाएगा। भले ही दुनिया आर्थिक मंदी का अनुभव करती होगी, मगर आप उन्नति करेंगे, आप हमेशा आनंदित रहेंगे। लेकिन आप गलत चुनाव करते हो तो, सारी चिंताएँ, तनाव, उदासी और सारी बिमारियाँ जिंदगी भर के लिए आपके मित्र बनें रहेंगे।

आज आप अपने इर्दगिर्द इस दुनिया को देखो, क्यों यह उदासी में डूब रही हैं? क्योंकि यह परमेश्वर से अधिक धर्म की सेवा करती है। इन्सान सृष्टि के रचईकर्ता से बढ़कर उनके द्वारा रची हुई इस सृष्टि के चिजों पर ज्यादा विश्वास करते है। मत्ती की किताब कहती है कि, "पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उनकी धार्मिकता की खोज करो, और सारी चिजें तुम्हारे जीवन में जोडी जाएंगी"। (मत्ती ६:३३) लेकिन हम मनुष्य उन मार्गों को खोजते है, जिससे हम अपनी पत्नी, बच्चे, समाज और अपने आपको खुश कर सके, बिना यह जाने कि, इससे हम परमेश्वर को कितना दुखी करते है।

अपने बातों पर ध्यान रखे।

कुरिन्थियों की किताब कहती है कि, मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे! सब कुछ तुम्हारा है, क्योंकि तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है। (१कुरिन्थियों ३:२१–२३) आपको केवल येशु मसीह में विश्वास करना है। येशु मसीह को अपने हृदय और देह में आने के लिए आमंत्रित करे। अगर एक बार येशु मसीह आपके हृदय और देह मे प्रवेश करेंगे तो फिर आप तुरंत चंगाई पाओगे। यह कितना आसान है।

किसी से भी बात करते हुए जीन शब्दों का उपयोग आप करते हो, उनमे सावधान रहे। आप किसी भी व्यक्ति के बारे में गलत नही सोच सकते या गलत बात नहीं कर सकते। और जैसे आप किसी की बढ़ाई नहीं कर सकते, वैसे ही किसी पर दोष भी नहीं लगा सकते। आपको एक सरल व्यक्ति बनना है। शुध्द प्राण की झलक हमेशा देह से प्रतिबिंबीत होती है, जो फूल के समान सुरज की किरणों के सामने खिलता रहता है। लेकिन जब पाप प्राणों को भ्रष्ट कर देता है, तब शरीर सड़ने लगता है, बूढा दिखता है – और फिर धीमी मौत होती है। अगर आप चालीस साल के होंगे तो साठ साल के दिखोगे, और जब आपकी उम्र पचास साल की होगी, तब आप अस्सी के लगोगे। क्यों? क्योंकि आपके पापी बर्ताव के कारण। ध्यान रखे, पाप की सजा चालीस साल तक भुगतनी पड़ती है।

तो अपने समस्याओं के लिए दुसरों को दोषी न ठहराना। शादीशुदा होने के बावजुद भी पति/पत्नी एक दुसरे के अधीन नही है। आपके बच्चे भी आपके नहीं परमेश्वर के है, आप केवल उनकी देखभाल करनेवाले हो। आप स्वयः भी अपने आप के नही हो, आपको एक दाम देकर खरीदा गया है। (1 कुरिन्थियों ६:१९–२०) येशु मसीह ने अपना लहु बहाकर आपको खरीदा है। आपका शरीर परमेश्वर की अमानत है। और आपका शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है।

तो हम इस संदेश को अपने हृदय में बसाते हुए इस नए साल की शुरूवात करेंगे। अगर आप वचन के अनुसार अपनी जिंदगी जीते हो तो, सही मायने में परमेश्वर आपको जरुर आशिर्वादित करेंगे।

–ब्रदर मैन्युएल मेरगुल्याओं

नए साल की शुभकामनाएँ २०१०

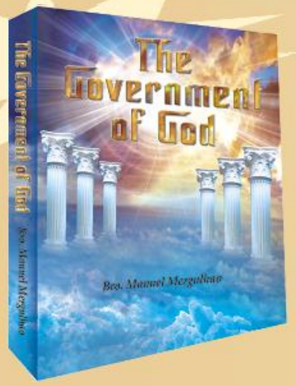

The Government of God

Bro.Manuel Mergulhao's first of many books

बैतलहम का सितारा

मेरे प्रिय भाईयों और बहनों,

यह मौसम है सितारे का। मैं आपसे अमिताभ बच्चन या शहारूख खान जैसे सितारों की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं बैतलहम के सितारे की बात कर रहा हूँ जो येशू है।

पवित्र शास्त्र में लिखा है कि, परमेश्वर से मिलने के लिए उन बुद्धिमान व्यक्तियों ने, बैतलहम के सितारे का पिछा किया। मगर हम यहाँ पर चाँद और तारों का पिछा करते है, यह सोचते हुए कि, वे हमारे जीवन, परिवार, व्यवसाय इत्यादि में बदलाव लाएँगे। नहीं, मेरे बंधुओ, ये चाँद और तारें आपको केवल इस संसार के अंधकार को दिखा सकते है।

मत्ती की किताब २:१० हम से यह कहती है कि, "उस तारे को देखकर वे अति आनंदित हुए उन्होंने उस घर पहुँचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और मुँह के बल गिरकर बालक को प्रणाम किया, और अपनी–अपनी थैली खोलकर उसको सोना और लोबान और गन्धरस की भेंट चढ़ाई।"

जैसे उन बुद्धिमान व्यक्तियों ने उस तारे का अनुसरण किया, वैसे ही, वह कौन है, जिसका अनुसरण आप करना चाहोगे? लेकिन याद रखे कि, जब आप परमेश्वर से मिलने के लिए बैतलहम के सितारे का अनुसरण करोगे तब साथ ही भेंट के रुप में चढ़ाने के लिए अपने तिजोरी के खजाने को भी जरुर लाए और आप आशिर्वादित हो जाएंगे, बिल्कुल उन बुद्धिमान व्यक्तियों की तरह।

इस नव वर्ष '२०१०' में परमेश्वर आपके परिवार, कारोबार, शिक्षण, घर, नौकरी और आपके दिल की हर एक इच्छाओं में चमकना चाहते है। जैसे आपने ब्रदर मैन्युएल को यह कहते हुए सुना होगा कि, यह साल अपने आपको तैयार करने का साल है, तो तैयार करो अपने आप को और आपके परिवार को क्योंकि, प्रभु येशु आपके जीवन में प्रवेश करना चाहते है। तो मेरे भाईयों राजा हेरोदेस के समान मूर्ख ना बनो, जिसने परमेश्वर के योजना को भी नहीं समझा।

उन बुद्धिमान व्यक्तियों की तरह बनो, जिन्होंने बैतलहम के सितारे का अनुसरण किया और उस जरिये से मिले जहाँ से सारे आशिश उमडते है। वे सबसे चमकीले तारे से मिले, नासरत के येशु मसीह से!

परमेश्वर आपको आशिर्वादित करें।

–संपादकीय डेस्क

उन्नति और अच्छी सफलता क्या है?

यहोशू की किताब १:८ कहता है कि, "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान रखा करना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे, क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू उन्नति करेगा।"

चलो देखे यह वचन कहना क्या चाहता हैः।

व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना,

व्यवस्था की पुस्तक, परमेश्वर का वचन है। वचन हमेशा हमारे मुख पर होना चाहिए और यह तब संभव हो सकता है, जब हम लगातार वचन को पढ़ें। परमेश्वर का वचन पुर्ण रूप से हमारे हृदय में समाना चाहिए, और यह तब हो सकता है, जब हम इस पर दिन ब दिन ध्यान करे।

इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करें।

पवित्र आत्मा आपको परमेश्वर के वचनों के प्रति प्रोत्साहित करेगा, और उनके गहरे अर्थों को समझाएगा, वह हर एक अध्यायों की ओर आपके मन को खोलेगा और जो भी उन वचनों में लिखा है, उसका अनुपालन करने में आपकी मदद करेगा। क्योंकि ऐसा करने से ही तेरे सब काम सफल होंगे, और तू उन्नति करेगा।

येशु मसीह ही वह मार्ग है, जो उन्नति से भरा है। क्यों मैं निगम (कौरपॅरिट) की सीढ़ी के सबसे उच्च स्थान पर नही हूँ? क्यों मुझे प्रमुख व्यक्ति का स्थान नहीं दिया गया?याद रखे कि, परमेश्वर ने मुझे और आपको एक ऐसी जगह और परिस्थिति में रखा है, ताकि हम अपना कार्य करते हुए उन सारी चीजों की देखभाल कर सके, जो उन्होंने हमें दि है। अगर हम उसका खयाल सही ढंग और आदर भरी भावना से नहीं रखेंगे तो, हम पीड़ा उठाऐंगे।

दुसरी बात "उन्नति का मार्ग" इसका मतलब है, हमारे काम करने का ढंग और चीजों की ओर देखने का नजरिया। क्यों हम उसके प्रति हमारे दिल और दिमाग में लालच भरी भावना रख रहे है? क्यों हम इस अपेक्षा के साथ चीजें करते और देते है कि, बदले में हमे उस व्यक्ति से कुछ न कुछ जरुर मिलेगा? हमारी उम्मीद केवल परमेश्वर से ही होनी चाहिए। आर्थिक बढ़ौती इस उन्नति के मार्ग का सबसे आखरी फल है। एक बार आपके पास यह "उन्नति का मार्ग" होगा, तो फिर आप वह दिमाग पाओगे जो आपको अपके जीवन के सारी परिस्थितियों में बुद्धिमानी से कार्य करने की समझ देगा और आप एक अच्छी कामयाबी हासिल करोगे।

और द्वार बंद हो जाता है।

मत्ती २५:१–१३

रात के समय का विवाह। दुल्हे को आने में देरी के कारण, दुलहन के तरफ के लोग सो जाते है। आखिर में जब आधी रात को दूल्हा आता है, तब आधी कुँवारियाँ जो अपने मशाल के लिए ज्यादा तेल लाने के लिए भूल गयी थी, जिसकी वजह से उन्हें विवाह के भोज में शामिल नही होने दिया जाता। पंक्ति 10: "और द्वार बंद हो जाता है।"

वह "द्वार" स्वर्ग की ओर ले जाता है, जो परमेश्वर के अनुग्रह से भरा हुआ है, जो क्रुस पर बहे हुए येशु मसीह के लहु के द्वारा खुल गया था। तो जब वे इस धरती पर वापस लौटेंगे, तब यह फिर एक बार हमेशा के लिए बंद हो जाएगा।

उन दस कुँवारियों में से पाँच समझदार थी, और पाँच मूर्ख।

पाँच के पास तेल था, और पाँच के पास नही।
पाँच तैयार थी; और पाँच नहीं।
पाँच विवाह के भोज में शामिल हो पायी; और पाँच को शामिल नहीं किया गया।

जब येशु लौटेंगे, तब कुछ ही लोग तैयार होंगे, और बाकी के नहीं। यह तेल, हमारे अंदर जो आत्मा का सामर्थ्य है, उसे दर्शाता है, जो सच्चे मन–परिवर्तन के साथ होता है। वह पाँच समझदार कुँवारियाँ उन लोगों को दर्शाती है, जिनका हृदय पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से भरपूर होकर परिवर्तित हो गया है। वह पाँच मूर्ख कुँवारियाँ उन जाति–धर्म का पालन करने वालों को दर्शाती है, जिन्हें पवित्र आत्मा ने उनके पापों के प्रति जागृत तो किया है, लेकिन वे कभी परिवर्तित हुए ही नहीं।

अगर आप केवल परिवार बंधनों की वजह से, मित्रों से मिलने, घर से बाहर निकलने, संगित मधूर और अच्छा होता है, लोगों को प्रभावित करने, अपनी दोष भरी भावना की वजह से, कर्तव्य समझते हुए, फिर परमेश्वर से कृपा दृष्टि पाने के लिए कलिसिया जाते हो तो, मेरे मित्रों इन सारी चिजों पर गौर करो:

कलिसिया जाना अच्छा है ⟶ लेकिन येशु के पास आना बेहतर है।

बपतिस्मा लेना अच्छा है ⟶ लेकिन पुन:र्जिवीत होना बेहतर है।

धन देना अच्छा है ⟶ लेकिन अपना हृदय येशु को देना बेहतर है।

धर्मिक होना अच्छा है ⟶ लेकिन मसीह को उद्धारक और प्रभु के रुप में जानना बेहतर है

कोई भी किसी दुसरे का विश्वास उधार नहीं ले सकता।

उद्धार हर एक इन्सान का निजी मामला है। आपको खुद की मर्जी से ही येशु मसीह पर विश्वास करना है, अपने खुद के लिए, और ना कि अपने इर्दगिर्द के लोगों के विश्वास पर आपको निर्भर रहना है।

आज यह उद्धार का द्वार हर एक के लिए प्रशस्त रूप से खुला है। जब आप मरोगे, तब यह द्वार बंद हो जाएगा। और जब मसीह वापस इस धरती पर लौट आयेंगे, तब यह द्वार हमेशा के लिए बंद हो जाएगा। अगर आप आज प्रभु की वाणी को नही सुनते हो तो, आप अपने हृदय को कठोर करोगे और फिर कभी ना आ पाओगे। तो आज ही आजाओ।

लोग जो बाहरी रूप से धार्मिक और अंदरी रुप से खाली है, वे परमेश्वर को यह कहते हुए सुनेंगे कि, " मैने तुम्हें नहीं पहचाना।"

आज उद्धार का द्वार प्रशस्त रूप से खुला है। किसी दिन यह हमेशा के लिए बंद हो जाएगा। तो जब वह दिन आएगा तो ध्यान रखे कि, आप उस द्वार के सहीं तरफ हो।

मत्ती २५:१३ में येशु ने अपने दुबारा आने का संकेत दिया है, जो कहता है कि, "इसलिए सावधान रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, और न उस पल को।"

– बहन लिनेट मेरगल्याओं

डिसंबर मे हुए कार्यक्रम

गोवा शुभसमाचार घोषणा
२७–२९ डिसंबर २००९

प्रभु ने ब्रदर मैन्युएल को गोवा घोषणा सभा में प्रभु का शुभसमाचार फैलाने में इस्तमाल किया। जहाँ बहुत से गोवा के सरकारी मंत्रीगण और कुछ चुने हुए व्यक्ति उस सभा में मौजुद थे।

ख्रिस्त जयंती के कार्यक्रम, २५ डिसंबर २००९

नये साल का कार्यक्रम, १ जनवरी २०१०

दस आज्ञाए

चौथी आज्ञा

विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना।

"क्या विश्राम के दिन चंगा करना उचित है या नहीं ?"

आदि में परमेश्वरने आकाश और पृथ्वी की रचना की। उत्पत्ति २:२–३ कहती है कि, "परमेश्वरने अपना काम जिसे वह कर रहे थे, सातवें दिन समाप्त किया, और अपने किए हुए सारे कामों से उन्होंने सातवें दिन विश्राम किया। और परमेश्वरने सातवें दिन को आशीष दी, और पवित्र ठहराया; क्योंकि उसमें उन्होंने सृष्टि की रचना के अपने सारे काम से विश्राम लिया था।"

विश्राम दिन क्या है? और क्यों कोई इसका पालन करे? विश्राम दिन को लेकर लोगों में इतनी उलझनें क्यों है?

प्रभु येशुने इन सारे सवालों का जवाब नए करार में दिया है। जो लोग अधिकार मे थे, वे येशू को विश्राम के दिन चमत्कार करने से रोकना चाहते थे। इसके बावजुद येशु ने विश्राम के दिन बहुत से चमत्कार किए (यूहन्ना ९:१४)। येशुने फरीसियों को यह कहकर चुप करवाया कि, "सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए। इसलिए मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।"

प्रिय बंधुओं, हम अंत के दिनों में जी रहें है। और हर एक दिन परमेश्वर के राज्य में महत्वपुर्ण है। हर एक दिन सब्त का दिन है। और हर एक दिन विश्राम का दिन है। फिलिप्पियों की किताब में, संत पौलुस कहते है कि, हमें डर और काँपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते रहना है। क्योंकि हम यह नहीं जानते कि, किस दिन प्रभु का आगमन होगा।

पतरस की किताब भी साफ रूप से प्रभु के आगमन के बारें मे कहती है। (२ पतरस ३:८) "हे प्रियो, यह बात तुम से छिपी न रहे कि प्रभु के यहाँ एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है।"

परमेश्वर चाहते है कि, हम हर एक दिन उनकी उपस्थिती में प्रार्थना, उपवास करे, उनके वचनों को पढे और नमन करे, और उनकी हर एक इच्छा का पालन करते हुए अपना जीवन जिए। ऐसा करके आप चंगाई और उन्नति प्राप्त करोगे। यशायाह की किताब भी यही बात कहती है कि, "यदि तू विश्रामदिन को अशुद्‌ध न करे अर्थात, मेरे उस पवित्र दिन में अपनी इच्छा को पूरी करने का यत्न न करे, और विश्रामदिन को आनंद का दिन और यहोवा का पवित्र किया हुआ दिन समझकर माने; यदि तू उसका सम्मान करके उस दिन अपने मार्ग पर न चले, अपनी इच्छा पूरी न करे, और अपनी ही बातें न बोले, तो तू यहोवा के कारण सुखी होगा, और मैं तुझे देश के उँचे स्थानों पर चलने दूँगा, मैं तेरे मूलपुरूष याकूब के भाग की उपज में से तुझे खिलाउँगा, क्योंकि यहोवा ही के मुख से यह वचन निकला है।" (यशायाह ५८:१३–१४)

परमेश्वर चाहते है कि, आप यह जाने कि, वे आप में और आप उन में निवास करते है। जब आप इस बात को जानोगे तब आप ऊँची उड़ान भरते हुए हर एक दिन प्रभु येशु मसीह में विश्रामदिन मनाते हुए, अपनी जिंदगी जीओगे। आमिन ......!

–संपादकीय डेस्क

नया साल

खोए कई लोग, ढूँढ़ने रंगीन दुनियाँ को नयेनये अंगों में,
विदेशीयों की नकल करते हुए, उनके नये नये ढ़ंगों में।
पछ़तावा करते हुए, सुधारने के संकल्प तो, थोडे से ही है,
प्रभु परमेश्वर कल–आज और सदा के लिए एक से ही है।
(इब्रानियों १३:८)
वह सभी के लिए है, और हर एक में बसे है,
नाम और जाति–धर्मों का, कोई बंधन ही नहीं है।
(प्रेरितों के काम १०:३४–३६, गलतियों ३:२८–२९)
ऐसे सारे लोगों के लिए, पवित्र वचन बना देहधारी, (यूहन्ना १:१४)
जिसने किया विश्वास येशु का, उसने पाया सामर्थ्य भारी।
अनंत जीवन में आते हुए, जिस में है परम सुख और शांति,
अधिकारी इसका हर विश्वासी, एक पवित्र परिवार के भाँति।
(यूहन्ना १०:१०, १४:२७, १६:३३, १७:२०)

–बेनेडिक्ट वी. फर्नांडिस

अन्तःशक्ति (भाग - 3)

2: आपके अन्तःशक्ति, को एक खास आकार में ढ़ाचा गया है, ताकि वह विशिष्ट रूप से कार्य कर सके: आपको आपके ज़रीये को जानना है। अगर ड़ॉक्टर आप से कहे कि, आपकी बिमारी ठीक नहीं हो सकती तो ऐसे प्रार्थना करना, "हे सैतान, तु मेरे सामने से दूर हो जा। मै मेरे ज़रीये को जानता हूँ। और मै यह भी जानता हूँ कि, मेरा ज़रीया मेरे लिए कुछ भी और सबकुछ करने की क्षमता रखता है।"

सूबेदारने येशु से कहा, "प्रभु, आप केवल अपने मुख से कह दे, और मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।" और उसका सेवक उसी क्षण चंगा हो गया। सूबेदार येशु की योग्यता को जानता था। मगर फर्क किसने लाया? सूबेदार के पास येशु के सामर्थ्य को कार्यशील करने की योग्यता थी। इसीलिए येशु ने कहा, "तेरे विश्वास ने ही तेरे सेवक को चंगा किया है। शांति में जाओ।" सूबेदार के पास विश्वास था। विश्वास वह बीज है, जो आप ही के भितर होता है। आपको जानना है कि, आपको आपका कार्य करने के लिए किस आकार में ढ़ाँचा गया है। जब आदम को अदन की वाटिका मैं भेजा गया था, उसे वहा एक कार्य को पूरा करना था। उसे वहाँ काम करके उस वाटिका की देखभाल करनी थी। यही उसका कार्य था। वैसे भी, आदम ने क्या किया? अपनी अंतःशक्ति को जानने के बदले, उसने परमेश्वर के समान बनने की इच्छा रखी। वह परमेश्वर से भी आगे दौड़ना चाहता था।

यदि आप हवाई जहाज को उसके महत्तम रफ़्तार से भी तेज उड़ाना चाहोगे तो, वह खडखड़ाएगा, काँपने लगेगा, और हो सकता है अपनी ऊँचाई को खो देगा। और अगर आप उसे उसकी न्यूनतम रफ़्तार सें भी कम उड़ाना चाहोगे तो, वह एक पत्थर के भाँति जमीन पर गिर पडेगा।

आपके विश्वास के साथ भी ऐसा ही है। अगर आप उसे आपके रफ़्तार से अधिक दौड़ाओगे, तो यह परमेश्वर से भी आगे दौडेगा। अगर आप उसे अपने रफ़्तार से कम दौड़ाओगे, तो आप पिछे रह जाओगे। आपको परमेश्वर के साथ ही दौड़ना है। चाहे वह आपकी गाड़ी हो या फिर कोई दुसरी मशीन, कुछ अपेक्षाएँ तो होती ही है। इसलिए किसी भी उत्पादन के साथ आपको एक पुस्तिका दी जाती है, जिसमे उत्पादन द्वारा अपेक्षित कार्य विधी लिखी जाती है।

कुछ लोग अपने कंप्यूटर को सिर्फ तेज भगाने के लिए तेज कार्यवाही में ड़ाल देते है। परंतु वे इस सत्य को नहीं समझते कि, वास्तविक में वे अपने मशिन को खतरे में ड़ाल रहें है। यही आपके जीवन के लिए भी लागू हो जाता है। आपको भी परमेश्वर द्वारा निर्धारित किए हुए विशिष्ट योजना के साथ कार्य करने के लिए रचा गया है। आदम को भी बगीचे की देखभाल करने के लिए रचा गया था, परंतु उसने गलत आवाज को सुना। जब तक वह परमेश्वर के साथ जुड़ा हुआ था, उसके दिल में शांति थी, और सब कुछ अच्छा चल रहा था। परंतु जब उसने गलत आवाज को सुना, वह भेद पहचान न सका और पाप कर बैठा। वह परमेश्वर के जैसा बनना चाहता था। वह भुल गया था कि, उसका कार्य बगीचे की देखभाल करना था। वह निर्माण कर्ता बनना चाहता था। वह परमेश्वर से भी आगे दौड़ना चाहता था। वह परमेश्वर से भी उपर उँड़ना चाहता था।

पवित्र शास्त्र कहता है, जो धनी होने में उतावली करता है, वह निर्दोष नहीं ठहरता। (नीतिवचन २८:२०ब) तो गरीबी आपके लिए रुकी है। (नीतिवचन २८:२२) आपको जानना है कि, आप किस उद्देश के लिए रचाए गए हो। आपको परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए रचा गया है। आपको अपने शरीर की देखभाल करने के लिए रचा गया है। आपको अपने शरीर को तंदुरूस्त रखने के लिए रचा गया है, (सिर्फ खाने से नहीं)। आपको अपने शरीर के हर एक हिस्से की देखभाल करनी है। आपका शरीर ही पवित्र आत्मा का मंदिर है। बहुत से लोगों के लिए शरीर की देखभाल मतलब, व्यायाम करना है, तो कुछ लोगों के लिए शरीर की देखभाल मतलब, रोज के काम–काज (बजार जाना, खाना पकाना, साफ सफाई) करना है। यह तो वाकई में व्यायाम नहीं है। आपको हर रोज कम से कम एक घंटा चलना ही है। अपने मांस पेशीयों को कसो। सही किसम के व्यायामशाला (जिम) में जाओ। और ऐसे अपने शरीर की देखभाल करो।

आप परमेश्वर की सेवा, आत्मिक रूप से स्वस्थ और शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहकर नहीं कर सकते।

परमेश्वर ने आपकी रचना एक विशिष्ट उद्देश रखकर की है। अगर आप परमेश्वर से सिखने में असफल होते हो तो, आप अपना कार्य कैसे करोग? आपको शॉर्ट–सर्किट का अनुभव तो होगा। आपको परमेश्वर से सिखना ही है। अगर आपके जीवन में ऐसे कोई परिस्थिती में आते है, तो तुरंत ही उसे संभाल लो। उसी हालात में नही जिना। अगर आपके शरीर में कुछ समस्या है, तो ऐसा मत कहो कि, यह ठीक है। बहुत से लोग अपने आपको ऐसी समस्या में पाते है। तो कुछ लोग अपने दु:ख–दर्द को कम करने के लिए गोलियाँ खाते है, और दर्द को दबा देते है। समस्या को दबाओ नहीं, लेकिन उस पर जीत हासिल करो। और इसे जितने के लिए आपको परमेश्वर के हृदय में समाना होगा, और आपको उस जरिए को जानना होगा, जहाँ से आप आये हो, क्योंकि परमेश्वर ने हमें हर एक दुष्ट का नाश करने का सामर्थ्य दिया है। उसने हमें अधिकार दिया है। ऐसा मत कहो कि, गाडी अपने आप ही चलेगी। गाडी को इंधन और सही देख भाल की जरूरत है। और सबसे महत्वपुर्ण बात यह है कि, इसे चालक की जरूरत है। अगर आपका शरीर गाडी है, तो आप चालक है।

–संपादकीय डेस्क

....आगे जारी रहेगा

गवाहियाँ

पिछले साल मेरे साथ एक बहुत ही बडी दुर्घटना हुई थी। मेरे कुछ मित्र और मै शराब पीकर बडी तेजी से गाडी चला रहे थे। अचानक हमारे गाडी के आगे का पैया पंक्चर हो गया, और हमारी गाडी नियंत्रण से बाहर हो गयी, और एक ट्रकने उसे कुचल दिया। इस दुर्घटना मे मेरे एक मित्र की मौत उसी स्थान पर हो गयी। और मैं भी पैंतालीस दिनों तक मूर्च्छा (कोमा) में था। और मुझपर सात तरह की शल्यचिकित्सा (सर्जरी) की गयी थी। इस दुर्घटना ने मेरे जीवन पर उसका गहरा प्रभाव हुआ। जिसकी वजह से मैं चल नहीं सकता था, और बाहर कदम रखने से भी ड़रता था। किसी तरह प्रार्थना सभाओं में आकर और ब्रदर मैन्युएल के शिक्षणों को सुनकर मेरा जिंदगी को देखने का नजरिया फिर से बदल गया है। परमेश्वरने उस दुर्घटना की सारी यादों को और उसके ड़र को मेरे जीवन से धोकर मिटा दिया है। अब मैं ठीक से चल सकता हूँ। और इसलिए मैं परमेश्वर को धन्यवाद और महिमा देता हूँ। –नारायण श्रीवास्तव

मैं कंधो की जकड़न की वजह से परेशान था। जब मैं ध्यानसभा में आया था, तब अपने हाथों को उपर नही उठा पा रहा था। लेकिन येशु के लहु और आत्मा में प्रार्थना करने के बाद, मैं ने प्रभु के स्पर्श को महसूस किया। अब मैं अपने हाथों को उपर उठा सकता हूँ। मैं परमेश्वर को उनके सारे कामों के लिए धन्यवाद देता हूँ।

–लॅरी मिरांड़ा

मैं लगभग पाँच सालों से गंभीर पैर दर्द से परेशान थी। दवाइयाँ भी मेरे दर्द को मिटाने में नाकाम रहीं। मेरे परिवार के लोग भी थक गए थे। मेरे बच्चे भी चिन्तित थे। लेकिन पहली ध्यानसभा में ही मेरी स्थिती पूरी तरह से ठिक हो गयी। परमेश्वर ने मुझे चंगाई दे दी है। अब मैं सामान्य रूप से चल सकती हूँ। –अनिता

जब मेरे पिता को अस्पताल में दाखिल किया गया था तब मै बहुत तनाव मे थी और बहुत दिनों तक मुझे सॉस लेने मे भी तकलिफ हो रही थी। मुझे जकड़न की भी समस्या थी, जिसके कारण मैं चल नही सकती थी। मेरी माँ मुझे हमेशा ब्रदर मैन्युएल मिनिस्ट्रीज में जाने की सलाह देती थी, लेकिन मैं आ नहीं पायी और सिधे ध्यानसभा में आ गयी। और अब परमेश्वर के अनुग्रह से मैं बहुत ही अच्छा महसूस हो रहा है। और मेरे दिल में परमेश्वर के आनंद का अहसास कर रही हूँ। –रितिका जोहरी

मैं सिर्फ ध्यान सभा करने के लिए कॅनड़ा से यहाँ आयी थी। वेरिकोस वेन्स की वजह से पिछले बारा सालों से मुझे पीठ दर्द की समस्या थी। मुझे पिछले छ महिनों से कंधो की जकड़न और जोड़ों के जकड़न की भी समस्या थी। मै अपने हाथों को हिला भी नहीं पा रही थी। लेकिन ध्यानसभा करने के बाद अब मैं बिना किसी दर्द से आसानी से अपने हाथों को हिला सकती हूँ। मैं परमेश्वर को महिमा और येशु को धन्यवाद देना चाहती हूँ, जो उन्होंने मेरे लिए किया है। –रिना ॲन्थोनि

मैं ब्रदर मॅन्युअल मिनिस्ट्रीज में भागीदार हूँ। अगस्ट के महीने में मैं ध्यानसभा खर्चे की भागीदार बनी। जब मैंने अपना बीज बोया, तुरंत ही मेरी तनख्वाह पाँच हजार रूपयों से बढ़ गयी। मैं ॲसिड़ीटी की समस्या से भी पिड़ीत थी, और मेरा पेट फूलता था। लेकिन जब ब्रदर मैन्युएल प्रार्थना कर रहे थे, तब ऐसा लगा कि, मेरे शरीर से कुछ तो बाहर निकल रहा है। और अब मेरे पेट फुलने की समस्या भी ठीक हो गयी है।

–ट्रिज़ा कोटियन

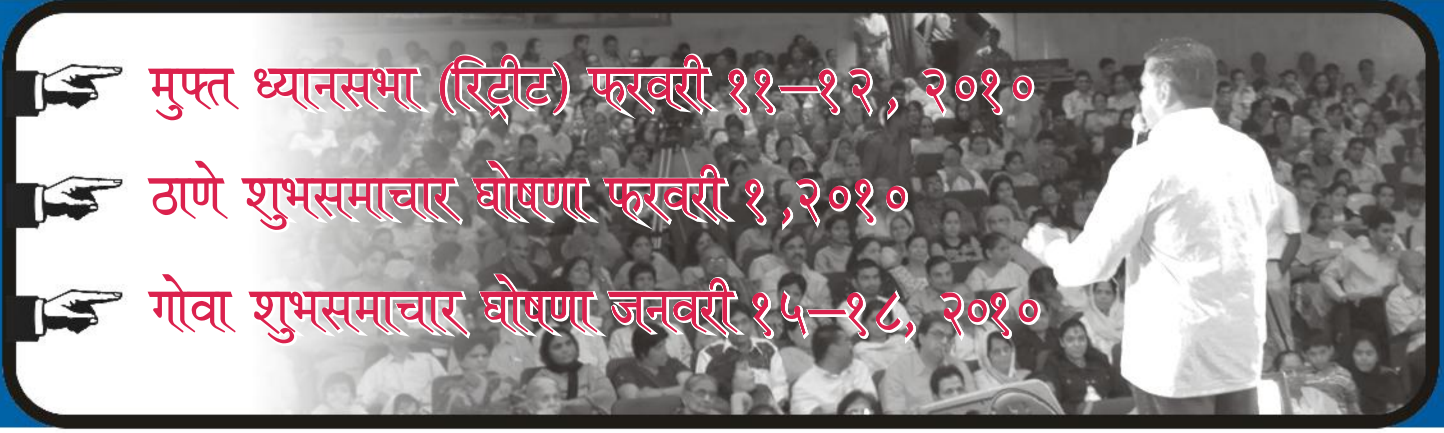

बुधवार
इंडियन ऐड्युकेशन सोसायटी ; ण्मैण्द्ध
मानिक सभा ग्रिहा
लिलावती हस्पताल के सामने,
बांद्रा (पश्चिम), मुंबई–400050, भारत
समयः शाम 5:30 चण्उ

शुक्रवार
ग्रीनविलेज रिसॉर्टस
आकाशवाणी केंद्र के सामने,
मार्वेरोड, मलाड (पश्चिम),
मुंबई–400064, (भारत)
समयः शाम 6:00 चण्उ

Live in the Spirit
BRO. MANUEL MINISTRIES

मुख्यकार्यालय
एस–4, ब्ल्यु नाइल अर्पाटमेन्टस
सी. एच. एस.लिमीटेड
प्लोट नंबर 39, वरोडा रोड
बांद्रा (पश्चिम), मुंबई–400050, भारत

PRINTED AT ASHUTOSH PRESS -Lower Parel